उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियां एक सामाजशास्त्रीय अध्ययन

(सागर नगर के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रश्मि दुबे
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

जब जब समाज का स्वरूप बदला शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन की बात हुई। आज कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा सभी शैक्षणिक स्तरों पर पढ़ाई जारी है। पर प्रश्न इन्टरनेट लर्निंग या ऑन-लाइन शिक्षा का नहीं है बात उस डिजिटल विभाजन की है जो अमीर और गरीब के बीच दिखता है। इस ऑन-लाइन शिक्षा के दौरान यदि एक भी बच्चा पढ़ाई से वंचित हो जाता है तो उसके साथ नाइंसाफी होगी। ऑनलाइन पढ़ाई की मजबूरी और आकर्षण के बीच यह जानना भी जरूरी है कि संख्या व ग्रामीण परिवेश को ध्यान में रखकर क्या देश इसके लिये वाकई तैयार है भारत गांव का देश है और उच्च शिक्षा में अध्ययनरत अधिकांश छात्र-छात्रायें गांव में निवास करते हैं। ऑन लाइन शिक्षा के दौरान छात्र-छात्राओं को अनेक समस्यायों का सामना करना पड़ रहा है। प्राथमिकता के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों को नेटवर्क सेवा से जोड़ा जाना चाहिये जिससे शिक्षा के विकास को एक नई दिशा मिल सके।

मुख्य शब्द - उच्च शिक्षा, ऑनलाइन, नेटवर्क, ई-शिक्षा।

कोरोना वायरस ने मानव जीवन शैली को बदल कर रख दिया है। मानव जगत में भय, स्वास्थ्य संकट, निराशा अनिष्ट की आशंका जैसी अनेक मानसिक समस्यायें परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं। कोरोना के भय से मानव ने स्वयं को भुला दिया है। महामारी के चलते देश में अनेक समस्यायें आर्थिक संकट, सामाजिक संकट, सांस्कृतिक संकट, राजनैतिक संकट उत्पन्न हुये हैं इस महामारी से कोई भी क्षेत्र कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहा। छोटे बच्चे, युवा, प्रौढ़ व वृद्ध सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कोरोना से प्रभावित थे और आज भी है।

इन्ही समस्यायों में एक-है- "शिक्षा जगत पर कोरोना महामारी का प्रभाव।" कोरोना ने शिक्षा जगत को हिला कर रख दिया है। शिक्षा संस्थाओं में पूरे वर्ष या आगामी वर्षों तक का शेड्यूल निश्चित कर दिया जाता है तथा विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है यह व्यवस्था प्रायमरी, मिडिल, हाईस्कूल, हायरसेकेण्डरी तथा उच्च शिक्षा तक में लागू की जाती है। जब भी कोई परिवर्तन होता है सामाजिक व्यवस्था में बदलाव होता है पर कोरोना काल में पूरी दुनिया के बंद हो जाने से तथा सारी संस्थाओं को बंद कर देने से समाज का स्वरूप ही बदल गया है। बंद के दौरान केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, सामाजिक कार्यकर्ता सभी को इस बात की चिंता थी कि शिक्षा में कैसे निरन्तरता बनी रहे क्योंकि इस महामारी में वायरस एक इंसान से दूसरे इंसान में आसानी से प्रवेश कर संक्रमण फैलाता

है। ऐसे समय में यह बहुत मुश्किल काम था। पर एक साल शिक्षा के पिछड़ जाने से अध्ययन रत बच्चों को बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ता जिसका उनके भविष्य व केरियर पर भी बुरा असर पड़ता इस कारण शिक्षा को निरन्तरता प्रदान करने के लिये शासन ने ऑनलाइन अध्यापन कार्य का विकल्प चुना।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते है और जिनका उद्देश्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व अनुभव और ज्ञान के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है।[1] यदि हम ऑनलाइन शिक्षा की बात करते हैं तो ये वेब आधारित शिक्षा है इसमें सारा काम डिजिटल के माध्यम से होता है। पाठ्य सामग्रियों का वितरण इंटरनेट आडियो वीडियो, टेप आदि के माध्यम से किया जाता है।

बदलते परिवेश में यदि हम ई शिक्षा के सकारात्मक पक्ष की और ध्यान दें तो यह शिक्षा का माध्यम छात्र छात्राओं के लिये बहुत उपयोगी है, क्योंकि इसमें विशेषज्ञ अपने ज्ञान का प्रचार अनेक स्तर पर कर सकते हैं विद्यार्थी कही भी रहकर सिर्फ लिंक से जुड़कर ज्ञान प्राप्त कर सकते है । इसमें न्यूनतम लागत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना उपलब्ध करवा सकते हैं शिक्षा जगत में ऑनलाइन शिक्षा की उपयोगिता इसलिये भी बेहतर है कि ये हर समय उपलब्ध रहने वाली प्रणाली है। भारतीय रूप से कक्षाओं में भाग लेने के लिये शिक्षार्थी किसी दिन व समय के अधीन नहीं होते। इस शिक्षा के लिये केवल बुनियादी इंटरनेट उपयोग आडियो वीडियो की जानकारी होना चाहिये[2]। 21 वी सदी के विद्यार्थियों के लिये यह बहुत उपयोगी है क्योंकि यह पाठ्यक्रम के भीतर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकीय के उपयोग को अंतः स्थापित कर कौशल विकास के द्वारा विद्यार्थियों को समर्थ बनाता है इंटरनेट और मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी विकास ई शिक्षा उपयोग के पांच मुख्य क्षेत्र के रूप में पहचाने जाते हैं परामर्श, सामग्री, प्रौद्योगिकी, सेवा और समर्थन।[3]

उदेश्य -

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति भारत वर्ष में मध्यप्रदेश के विद्यार्थियों के लिये कोरोना संकट के समय अनिवार्य रूप से लागू की गई इसमें प्रायमरी से उच्च शिक्षा तक शिक्षा का प्रावधान था। मध्यप्रदेश एक पिछडा प्रदेश होने के कारण यहां प्रौधोगिकी विकास कम है। ऑनलाइन कक्षाओं में नेट का होना अनिवार्य है बिना नेट के ऑनलाइन विद्यार्थी अध्यापन से नहीं जुड़ सकता ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा के दोनों पक्ष देखने को मिले प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उदेश्य यह पता लगाना है कि क्या ऑनलाइन शिक्षा पद्धति उचित है ? छात्र छात्राओं का निवास क्षेत्र कहां है? ऑनलाइन शिक्षा के दौरान छात्र छात्राओं के नेटवर्क की समस्या ? ऑनलाइन शिक्षा के लिये छात्र छात्राओं में किस उपकरण का उपयोग किया ? ऑनलाइन शिक्षा के दौरान ऑनलाइन कक्षा में छात्र छात्राओं की उपस्थिति का विवरण तथा क्या ऑन लाइन शिक्षा पद्धति हमेशा लागू रहना चाहिये या नहीं ? इन सभी - प्रश्नों से संबंधित आंकड़ों को एकत्रित कर समाज वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करना शोध का मुख्य उदेश्य है।

अध्ययन पद्धति -

शोध अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया। अध्ययन क्षेत्र के लिये सागर नगर का चयन किया गया सागर के महाविद्यालयों में अध्ययन रत 200 छात्र-छात्राओं का चयन निदर्श के रूप में किया गया। तथा ऑनलाइन व ऑफलाइन साक्षात्कार के द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया।

ISSN 2395-051X

कोरोना के समय ऑनलाइन शैक्षणिक व्यवस्था लागू तो कर दी गई पर छात्र-छात्रायें इस व्यवस्था को उचित मानते हैं या नहीं यह जानने का प्रयास किया गया तो निम्न आंकड़े प्राप्त हुये।

तालिका क्र. 1

क्या ऑन लाइन शिक्षा पद्धति उचित है

क्र.	मत	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	उचित है	40	60	20.00	30.00	50.00
2	उचित नहीं है	30	30	15.00	15.00	30.00
3	कोई उत्तर नहीं	30	10	15.00	05.00	20.00
	कुलयोग	100	100	50.00	50.00	100.00

सभी निदर्शित विद्यार्थी उच्च शिक्षा से संवंधित होने के कारण ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को अच्छी तरह से जानते हैं अध्ययन हेतु जब छात्र - छात्राओं से बात की तो पता चला कि 50.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने ऑन लाइन शिक्षा को उचित बताया है जबकि 30.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने ऑनलाइन शैक्षणिक कार्य को उपयुक्त नहीं माना है 20.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस संबंध में कोई जवाब नहीं दिया। म.प्र में ग्रामीण इलाके में वहुतायत छात्र छात्रायें निवास करते हैं सागर शहर में भी पढ़ाई करने वाले बहुतायत छात्र छात्रा ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं, निदर्श से जव उनके निवास संबंधी जानकारी ज्ञात की तो निम्न आंकड़े प्राप्त हुये -

तालिका क्र. 2

निदर्शित छात्र छात्राओं के निवास संबंधी जानकारी

क्र.	निवास	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	ग्राम	50	60	25.00	30.00	55.00
2	नगर	40	30	20.00	15.00	35.00
3	कस्बा	10	10	05.00	05.00	10.00
	कुलयोग	100	100	50.00	50.00	100.00

उपरोक्त आंकडों से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में अध्ययन रत 55.00 प्रतिशत छात्र छात्रायें ग्रामीण क्षेत्र ों निवास करते हैं वे अध्ययन हेतु विभिन्न साधनों से सागर आते हैं 35.00 प्रतिशत विद्यार्थी नगर में रहते है और .0.00 छात्र छात्रा विभिन्न कस्बों में रहते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे सागर नगर से अन्य ागरों में उच्च अध्ययन हेतु चले जाते हैं और आप पास के गांव के अधिकांश बच्चे सागर आकर पढ़ाई करते हैं · या तो कमरा लेकर अध्ययन करते हैं, या छात्रावास व अन्य जगहों पर अपना अस्थायी निवास बनाते है। पर कोरोना

ISSN 2395-051X

के कारण बच्चे अभी अपने गांव पर ही रह रहे हैं।

मध्यप्रदेश में गांव की संख्या अधिक है तथा दूरस्थ इलाकों में गांव वसे हुये है। यहां इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है कोरोना महामारी में कालेज बंद होने के कारण ऑन लॉइन पढ़ाई की व्यवस्था की गई लेकिन ऑन लाइन पढ़ाई में नेट कनेक्टिविटी सबसे बड़ी समस्या बन गई है ऑनलाइन अध्ययन -रत छात्र छात्राओं से जब नेटवर्क संबधी जानकारी एकत्रित की गई तो उन्होने निम्न जानकारी दी।

तालिका क्र. 3

निदर्शित छात्र - छात्राओं के निवास क्षेत्र में नेटवर्क की उपलब्धता

क्र.	मत	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	(प्रतिशत)
1	नेटवर्क पूरे समय रहता है	30	30	15.00	15.00	30.00
2	नेटवर्क नहीं है	50	60	25.00	30.00	55.00
3	नेटवर्क कभी कभी रहता है	20	10	10.00	05.00	15.00
	कुलयोग	100	100	50.00	50.00	100.00

नेटवर्क की उपलब्धता की समस्या न केवल गांव बल्कि नगरों में भी आ जाती है। ग्रामीण इलाकों में यदि नेटवर्क का इस्तेमाल करना है तो मीलों चलकर जाना पडता है कई बार बच्चे दूर जंगलों तक में नेटवर्क के चक्कर में पंहुच जाते है। निदर्श छात्र छात्राओं से जब पूछा गया कि वे जहां पढाई कर रहे हैं वहां नेटवर्क है तो 30.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने बताया कि वे जहां भी रहकर पढ़ाई कर रहे हैं वहां पूरे समय नेटवर्क रहता है। 55.00 विद्यार्थियों ने बताया कि हम लोग जिस स्थान पर रहते हैं वहां नेटवर्क बिल्कुल भी नहीं रहता हम लोग पढ़ाई से पूरी तरह वंचित हैं क्योंकि हम कोरोना के कारण किसी अन्य स्थान पर भी नहीं जा सकते। अध्ययन के दौरान 15.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने कहा कि हमारे क्षेत्र में कभी कभी नेटवर्क रहता है पर उसका समय निर्धारित नहीं रहता है कि नेट कनेक्शन कब तक रहेगा कभी पढ़ाई के दौरान ही नेटवर्क चला जाता है और लम्बे समय तक हम नेटवर्क से नहीं जुड़ पाते हैं।

आज के वर्तमान दौर में हम दोस्त, समाज, परिवार व अपने दैनिक जीवन के कार्य के लिये विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करते हैं मोबाइल, कम्प्यूटर, लेपटॉप, आई पेड आदि। आज परिवार के हर सदस्य के पास कोई न कोई उपकरण है जिसका उपयोग वे सुविधा व पढ़ाई हेतु करते है। अध्ययन के दौरान निदर्शित छात्र छात्राओं से जब यह पूछा गया कि अध्ययन के लिये आप किस उपकरण का इस्तेमाल करते हैं तो जानकारी प्राप्त हुई।

तालिका क्र. 4

निदर्शित छात्र-छात्राओं के द्वारा ऑनलाइन अध्ययन हेतु उपयोग में लाये जाने वाले उपकरण

क्र.	उपकरण का नाम	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	(प्रतिशत)
1	मोबाइल	75	88	37.50	44.00	81.50
2	कम्प्यूटर	05	05	2.50	2.50	5.00
3	लेपटॉप	15	05	7.50	2.50	10.00
4	आईपेड	05	02	2.50	1.00	3.50
5	अन्य	00	00	00.00	00.00	00.00
	कुलयोग	100	100	50.00	50.00	100.00

उपयुक्त आंकड़ों से स्पष्ट है निदर्शित छात्र छात्राओं में 81.50 प्रतिशत विद्यार्थी मोबाइल का उपयोग करते हैं, 5.00 प्रतिशत छात्र छात्रायें कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं, 10.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं के पास लेपटॉप है जबकि 3.50 प्रतिशत छात्र छात्रा आईपेड का इस्तेमाल करते हैं। इससे स्पष्ट है कि मोबाइल का सर्वाधिक उपयोग इसलिये किया जाता है कि वो अन्य उपकरण से सस्ता है और नेटवर्क न मिलने पर वो दूर जाकर भी उसका उपयोग कर सकते हैं। आईपेड बहुत मंहगा उपकरण होने के कारण छात्र छात्राओं में इसका सबसे कम उपयोग पाया गया।

अध्ययन के दौरान छात्र-छात्राओं से उनकी उपस्थिति संबंधी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की तो पहले तो उन्होने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया पर जब उन्हें यह समझाया गया कि आपकी उपस्थिति का परीक्षा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तो उन्होंने सहर्ष बात स्वीकार कर ली और निम्न जानकारी दी।

तालिका क्र. 5

निदर्शित छात्र छात्राओं की ऑनलाइन कक्षा में उपस्थिति

क्र.	उपस्थिति	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	(प्रतिशत)
1	उपस्थित होते हैं	20	20	10.00	10.00	20.00
2	उपस्थित नहीं होते	50	60	25.00	30.00	55.00
3	कभी कभी उपस्थित होते है	30	20	15.00	10.00	25.00
	कुल योग	100.00	100.00	50.00	50.00	100.00

निदर्श से प्राप्त आंकड़ों से पता चला कि 20.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने यह बताया कि वे अध्यापन के दौरान ऑनलाइन उपस्थित रहते हैं। 55.00 छात्र छात्राओं ने बताया कि वे ऑन लाइन उपस्थित नहीं हो पाते

25.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने बताया कि वे कभी - कभी ऑन लाइन कक्षा में उपस्थित हो जाते है। जहां एक तरफ सरकार ने शिक्षा व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन के लिये ऑन लाइन कक्षाएं प्रांरभ की वहां छात्र छात्राओं की कम उपस्थिति चिंता का विषय भी है। यह पूछने पर कि ऑन लाइन उपस्थित क्यों नहीं हो पाते तो छात्र-छात्राओं के जवाब से यह निष्कर्ष निकला कि या तो उनके पास मोवाइल व अन्य उपकरण नहीं है या नेटवर्क नहीं रहता इसके अलावा यह भी पता चला कि छात्र छात्राओं के पास स्वयं का मोवाइल न होने से वे पिताजी भाई या अन्य रिश्तेदारों के मोबाइल का उपयोग उस समय तक ही कर पाते हैं जब तक कि वो घर पर रहते है। इस दौरान एक और समस्या भी सामने आई कि 5-6 भाई बहनों के बीच एक ही मोबाइल है और उस समय जिसको ज्यादा जरूरत होती है वो उसका उपयोग पहले करता है। लगभग 7-8 माह ऑनलाइन अध्यापन के बाद छात्र छात्राओं से यह भी जानकारी एकत्रित की गई कि क्या वे हमेशा ऑनलाइन पढ़ाई करने के इच्छुक हैं तो निदर्श से निम्न आंकड़े प्राप्त हुये

तालिका क्र. 6

क्या ऑन लाइन पढ़ाई हमेशा होना चाहिये

क्र	निदर्श के उत्तर	आवृति		प्रतिशत		प्रतिशत
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	कुलयोग
1	हां	40	60	20.00	30.00	50.00
2	नहीं	60	40	30.00	20.00	50.00
	कुलयोग	100	100	50.00	50.00	100.00

उक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि 50.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने कहा कि ऑनलाइन पढ़ाई हमेशा होनी चाहिये जबकि 50.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने कहा कि ऑनलाइन पढ़ाई नहीं होनी चाहिये।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह कह सकते हैं 50.00 प्रतिशत बच्चों तक ही यह ऑनलाइन शिक्षा पंहुच पाती है। इसके अलावा ऑनलाइन कक्षा के दौरान बच्चे क्या सीख रहे हैं इसका कोई सार्थक मूल्यांकन संभव नहीं है। कहीं मोबाइल नहीं कहीं नेट नहीं। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे बहुत सारे एप से अनिभिज्ञ होते है इस कारण उन्हें वीडियो व रिकार्डिग भेजने का कोई मतलब नहीं है

आज जब सरकार प्रत्येक बच्चे की शिक्षा पर अध्यधिक ध्यान दे रही है ऐसे में यदि एक बच्चा भी पढ़ाई से वंचित होता है तो पढ़ाई का यह माध्यम अन्याय पूर्ण होगा। 30 जनवरी 2020 तक देश के केवल सात उच्च शिक्षण संस्थान ऐसे थे जिन्होंने यूजीसी की 2018 गाइड लाइन के अनुसार ऑन लाइन कोर्स उपलब्ध कराने की इजाजत ली हुई थी। कोविड 19 की महामारी फैलाने से पहले देश के लगभग 40 हजार उच्च शिक्षा संस्थानों में से अधिकतर के पास ऑन लाइन पाठ्यक्रम की अनुमति नहीं थी इसलिये जब केन्द्र व राज्य सरकार ने इन संस्थानों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से छात्र-छात्राओं को आनलाइन पढ़ाई का आमंत्रण दिया तो ये संस्थान इसके लिये तैयार नहीं थे। समस्या के निदान हेतु बहुत सारे एप गूगल मीट, कैलेण्डर मीट, क्लास मीट जारी हुये लेकिन एक कक्षा में 700 वच्चों ने प्रवेश लिया और गूगल मीट में मात्र 100 विद्यार्थी ही जुड़ सकते हैं इस पर विचार किया जाना आवश्यक कि जो 600 विद्यार्थी नहीं जुड़ पाये उनका क्या होगा। आम धारणा है कि आजकल सभी बच्चों के पास मोबाइल

कम्प्यूटर, लेपटॉप आदि उपलब्ध होते हैं। पर अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि यह बात एकदम गलत है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में छात्र छात्रायें दूर दराज से आते हैं। ग्रामीण इलाकों के भी बच्चे होते हैं। और यदि यह सोचकर कि कोई न कोई संसाधन तो बच्चों के पास होगा ही यह सोचना गलत होगा क्योंकि अधिकांश छात्र छात्रायें ग्रामीण इलाकों में रहते हैं या लॉकडाउन के कारण अपने गांव लौट आये हैं। उनके पास इन्टरनेट की पर्याप्त सुविधा न होने के कारण वे पढ़ाई से पूरी तरह वंचित थे। कोरोना महामारी में जब लोगों के रोजगार चले गये लोग अपने गांव वापिस आ गये बेरोजगार हो गये ऐसे समय में मोबाइल का नेटपैक लेना उनके लिये बहुत ही असंभव काम था।

अब देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इन्टरनेट सेवा उपलब्ध कराने वाली योजना भारत नेट 2011 से चल रही है लेकिन आज भी ग्रामीण इलाकों में नेट की पंहुच नहीं है। इसे प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिये जिससे ग्रामीण क्षेत्रों को नेटर्वक सेवा से जोड़ा जा सकें। यह शिक्षा के विकास की दिशा में एक नया कदम होगा इसके साथ ही लम्बी अवधि तक ऑनलाइन शिक्षण के समाधान के लिये राज्य व केन्द्र सरकारों को चाहिये कि वे सभी शिक्षण संस्थानों को भी अच्छी ब्राडबेंड सेवा ओर ऑनलाइन पढ़ाई के लिये लेपटॉप और कम्प्यूटर उपलब्ध करायें जिससे ऑनलाइन अध्ययन अध्यापन का काम सुचारू रूप से संचालित हो सके तथा सभी छात्र-छात्रायें ऑनलाइन शिक्षण पद्धति से लाभान्वित हो सके।

संदर्भ :

1 रोजर एम., जर्नल ऑफ इ लर्निंग, क्या ई शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षा का समाधान है, 2004।

2 केर्कमैन, एल., क्रॉनिकल ऑफ फिलान्थ्रोपी, ऑन लाइन शिक्षा की सुविधा मिडकेयर छात्रों को आकर्षित करती है, (एकेडमिक सर्च प्रीमियर के डेटा बेस से उद्धत) 2004।

3 नेगी ए., ई शिक्षा का प्रभाव-स्प्रिंगर वर्लेग, पी.पी. बर्लिन, 2005।